তরু মুখার্জীর
ংগিত
কথা নেই

কিন্তু বিধি-লিপি খণ্ডন করে, কে এমন শক্তিধর ?

আশা-চরিতার্থতার পথে এই ব্যর্থতা প্রায় মরিয়া কোরে তোলে ধনীর সে বর্বর ছেলেটিকে। হিতাহিতজ্ঞানশূন্য সেই দুর্বৃত্ত যুবকের চিত্ত প্রতিহিংসায় জর্জর। সে গুণ্ডা লাগিয়ে আগুন ধরিয়ে দেয় নব-বিবাহিত দম্পতির বাড়ীতে। সে আগুনের করালগ্রাসে প্রাণ দেয় চাষী-যুবকটির মা অর্থাৎ মেয়েটির শাশুড়ী।

অত্যাচারের বর্বরতায় নিষ্পেষিত ছেলেটি ও মেয়েটি। দু'জনেই আশ্রয়হীন, অসহায়!

এই চূড়ান্ত মুহূর্তে আবির্ভাব ঘটে একটি মানুষের।

সাধারণ মানুষ নয়; খামখেয়ালী এক পাগল।

মেয়েটি যখন বাঁচবার জন্যে দুরন্ত সংগ্রামে রত, এই নিষ্ঠুর পৃথিবী তখনও তাকে এই দুর্দশা থেকে মুক্তি দেয় না। বরং তাকে আরও বিপন্ন কোরে তোলে যখন তার স্বামী ধরাপড়ে নরহত্যার অপরাধে। এই হৃদয়বিদারক ও মর্মান্তিক বেদনাময় দুঃসহ মুহূর্তে আসে সেই পাগল—তরুণী-বধূটির এই ঘোর বিপদে একমাত্র বন্ধুরূপে।

মেয়েটি ঐ পাগলটিকে অবিভূত করে; পাগলের মধ্যে বুঝি খুঁজে পায় পরম সান্ত্বনা!

কিন্তু এর পরিনতি কোথায় ?···কোথায় এই কাহিনীর সমাপ্তি ?

দুঃসহ দুঃখের অন্তে; অনন্ত বিশ্বাসের দিগন্ত কি মেঘমুক্ত সূর্যের প্রসন্ন হাসিতে উদ্ভাসিত হবে না ?

এর উত্তরের ইংগিত এই ছবি·····

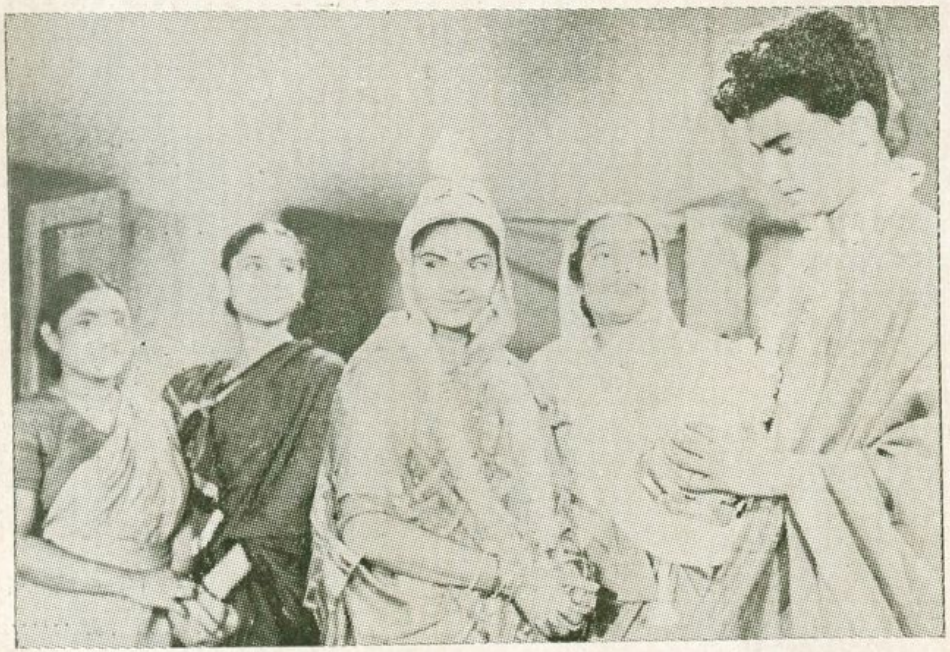

Ingeet

(Indication)

This story centres round a small village in West - Bengal. The villager are, by and large, happy with their vocation—

The family which prominently figures in this picture consits of a farmer, his wife, a son and a charming daughter—a gem among stones.

The daughter loves a farmer's son of a neighbouring locality. A widow—the common "auntie" of that village and the sister of that boy happen to be the only persons who have been in the know of this matter.

An old man, however, secures the topmost position of that village by lending money to the needy villagers at high interests.

The poor girl falls a prey to this Shylock's desire for marriage.

Incidentally, while the boy and the girl are over head and ears in love, a lecherous son of a wealthy person hailing from a distant village falls desperately for the beautiful and young girl. Thus she finds the Shylock on the one side and the debauchee on the other.

But the undaunted "auntie" anyhow secretly manages to get the girl and the farmer's son united in wedlock. Love finds its fulfilment.

But inscrutable are the ways of fate.

This stirs up the villainy in the spoilt child of the rich man. He gets furious and feels no scruples to engage men to put fire into the hut of the farmer's son. The latter's mother gets seriously burnt and ultimately dies.

The two families in this way tumble down under the wheels of tyranny.

At this psychological moment, comes a lunatic, when the helpless girl has been fighting the battle of life and staggering under a truckload of bitter situations—the conviction of her husband on the charges of homicide on the one hand and her helplessness on the other.

The girl who visibly moves the lunatic, appears to have found some solace in him. So runs the tale. But what is its upshot? Will the sun ever rise again in their lives—dispelling all clouds of misery and chill penury ?

"Ingeet" knows the answer.

इंगित

कहानी का साराँश

———:o:———

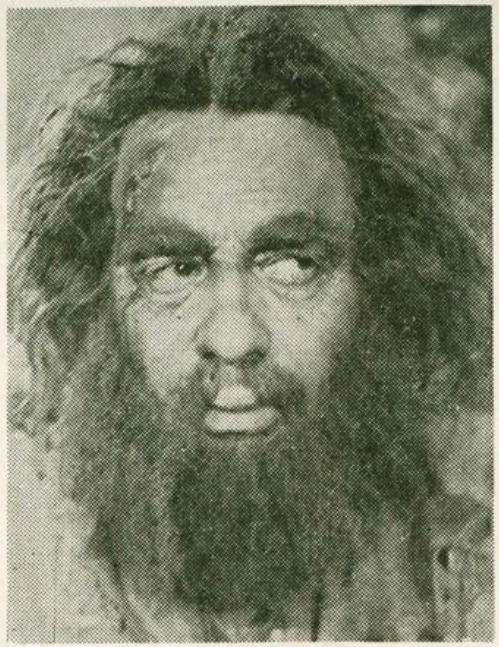

पश्चिम बंगाल के एक छोटे से ग्राम के इर्दगिर्द घूमती हुई कहानी। ग्राम लक्ष्मी की स्नेह-छायामें बसते हुये प्रायः अधिकांश किसान थे। आनन्द से खेती करते और थोड़े में तृप्ति लाभ करते।

ऐसे ही एक परिवार...आनन्द से परिपूर्ण जीवन...किसान, किसान की स्त्री एक लड़का और जवान लड़की। स्वस्थ, रूप और गुण में लक्ष्मी यह किसान-कन्या !

अपने पड़ोसी एक किसान के लड़के को प्यार करती थी यह किसान-कन्या। इस प्रेम की कहानी से सारा ग्राम अनभिज्ञ थी। सिर्फ जानती थी सारेग्राम की एक मौसी ! और उस लड़के की छोटी बहन !

इसी गांव का एक सूदखोर महाजन ! ऊंचे सूद में रुपया देता था। सारे गांव पर उसके प्रभाव का यही एक कारण था।

बृद्ध सूदखोर की लोलुप-दृष्टि पड़ी उस सुन्दरी किसान कन्या पर— बृद्ध चाहता था उसे व्याह करके घर में लाना।

मुसीबत अकले नहीं आई—किसान कन्या और पड़ोसी लड़के में प्रगाढ़ प्रेम था। दूर गांव के एक धनी का आवारा लड़का किसान कन्या को प्राप्त करने के लिये प्रायः पागल सा हो उठा।

एक ओर बृद्ध सूदखोर की लोलुप-दृष्टि, दूसरी ओर एक धनी दुश्चरित्र लड़के का नारी शिकार की चेष्टा। इन दो अग्नि कुंड के मध्य में जलती हुई असहाय वह किसान-कन्या। उसकी इज्जत और मनोकामना की रक्षा हुई उसी बृद्धा मौसी की चेष्टा से ! दोनों दुष्टों की चालों को व्यर्थ करके दो कोमल हृदयों का अटूट प्रेम एक अटूट बन्धन में बंध गया।

किन्तु विधि-लिपि का खण्डन करे, किसमें इतनी शक्ति थी !.........

आशा टूट जाने से वह धनी आवारा लड़का भले बुरे का ज्ञान खो कर प्रतिहिंसा की आग में जलने लगा। गुंडों के द्वारा नवदम्पति के मकान में आग लगवा दी। और उस आग में लड़के की मां याने किसान कन्या की सास जल मरी। अत्याचार और वर्बरता के शिकार हुये दो प्रेमी हृदय दोनों आश्रय हीन और निस्सहाय !

ऐसे कठिन समय में आविर्भाव हुआ एक मनुष्य का— साधारण मनुष्य नहीं— बल्कि एक पागल का ! किसान कन्या जीवन रक्षा के लिये संघर्ष-रत थी— किन्तु निष्ठुर संसार ने उसे इस दुर्दशा से मुक्त होने नहीं दिया। उसका स्वामी नर-हत्या के अपराध में पकड़ा गया। ऐसे हृदयविदारक और बेदनामय महूर्त में आया वह पागल। युवती और युवक के घोर विपद के समय एक बधु के रूप में— किसान कन्या को पागल के स्नेह और सहानुभूति से परम शांति प्राप्त हुई।

लेकिन इसकी परिणति कहाँ थी— कहां थी इस कहानी की समाप्ति ! दुःसह दुख के अन्त में— अनन्त विश्वास का सूर्य क्या विपद के घने बादलों से मुक्त होकर आलोकित न होगा !

इसका उत्तर तो नहीं —— किन्तु इंगित है.............

মুক্তি আসন্ন-প্রায় !
ডিল্যুক্স-নিবেদিত—তারাশঙ্কর-রচিত
কান্না
পরিচালনা ঃ অগ্রগামী

★

তারাশঙ্করের
সর্বশ্রেষ্ঠ সাহিত্য-কীর্তি
কান্না
শ্রেষ্ঠাংশে ঃ উত্তমকুমার - রাধামোহন
নবাগতা নলিতা বসু

★

মুক্তি-পথে
তারাশঙ্করের আর একটি অনন্য সৃষ্টি
উ-ত্ত-রা-য়-ণ
শ্রেষ্ঠাংশে ঃ উত্তম ॥ সুপ্রিয়া ॥ সাবিত্রী
অনিল ॥ পাহাড়ী ॥ গঙ্গাপদ ॥ প্রেমাংশু
পরিচালনা ঃ অগ্রদূত
সংগীত ঃ রবীন চ্যাটার্জী

ইংগিত

চিত্র - প্রযোজনার ইতিহাসে এক দুঃসাহসিক !
প্রচেষ্টা - যাতে কোন কথা নেই !

★

।। প্রযোজনা-পরিচালনা ও কাহিনী ঃ তারু মুখোপাধ্যায় ।।

॥ সহযোগী-পরিচালক ঃ বীরেন ভট্টাচার্য ॥ ॥ তপন দাস ॥

॥ সহকারী-পরিচালক ঃ কালীপদ জোয়ারদার ॥

॥ সংগীত ঃ ওস্তাদ আলি আকবর খাঁ ॥ নৃত্য-পরিচালনা ঃ লক্ষ্মীশংকর ॥

॥ চলচ্চিত্রায়ণে ঃ নণী দাস ॥ ॥ চিত্র-সম্পাদনায় ঃ অমিয় মুখার্জী ॥

॥ শব্দানুলেখনে ঃ জে-ডি-ইরানী ॥ শ্যামসুন্দর ঘোষ ॥

॥ শিল্প-নির্দেশে ঃ নরেশ ঘোষ ॥ ॥ শচীন মুখোপাধ্যায় ॥

॥ রূপ-সজ্জায় ঃ শৈলেন গাঙ্গুলী ॥ ব্যবস্থাপক-কর্মকর্তা ঃ প্রভাত দাস ॥

ব্যবস্থাপানা-সহকারী ঃ নরেশ দাস

॥ প্রচার-পরিচালনা ঃ সুধীরেন্দ্র সন্যাল ॥

॥ স্থির-চিত্র-শিল্পে ও প্রচার-সজ্জা-পরিবেশনে ঃ ফটো ফ্লাস ॥

॥ শিল্পী কালীকর ॥ ফ্যান্সী প্রিন্টিং ॥ বি-টি এজেন্সী ॥ এস-বি কনসার্নস্ ॥

★

চরিত্র-চিত্রণে

॥ তরুনী-নায়িকা ঃ **লিলি চক্রবর্তী** ॥ তরুণ নায়ক ঃ **প্রভুল চৌধুরী** ॥

॥ চাষী ঃ মনমোহন ॥ ॥ চাষীর স্ত্রী ঃ গীতা প্রধান ॥

॥ চাষীর বালক-পুত্র ঃ মাষ্টার তরুণ ॥ গ্রাম সম্পর্কে পিসি ঃ মেনকা ॥

॥ কুশীদজীবি ঃ কালী প্রসন্ন ॥ ॥ পাগল ঃ ধীরাজ দাস ॥

॥ নায়কের ছোট বোন ঃ শুভ্রা ঘোষ ॥ নায়কের মা ঃ রত্না বাগ্‌চি ॥

॥ ধনী-পুত্র ঃ দীপক মুখার্জী ॥

★

সারা-বিশ্বের পরিবেশন সত্বের অধিকারী

পারশমল – দীপচাঁদ

৮৭, ধর্ম্মতলা ষ্ট্রীট ঃঃ ঃঃ কলিকাতা-১৩

★

কাহিনী—

পশ্চিম বাঙলার একটি ছোট গ্রাম।

সেই পল্লীকে কেন্দ্র করে এই কাহিনীর বিস্তার।

পল্লী-লক্ষ্মীর স্নেহের ছায়ায় মানুষ যারা এই গ্রামের, তারা অধিকাংশই চাষী। এরা চাষ করে আনন্দে। এই বৃত্তিতেই এরা পরিতৃপ্ত।

এমন একটি সংসার……

আনন্দের পরিপূর্ণতায় প্রাণ ওল!

চাষী, চাষীর স্ত্রী, একটি ছেলে একটি তরুণী-কন্যা।

অপরূপ এই কন্যাটি। স্বাস্থ্যে, সৌন্দর্যে ও গুণে অনন্যা এই তরুণী!

এদেরি প্রতিবেশী, আর একটি চাষী পরিবারের একটি তরুণকে ভালবাসে এই তরুনী। সরলা গ্রাম্য-ললনার প্রাণ-উজাড় করা সেই ভালবাসার কথা আর সকলের কাছেই অব্যক্ত থাকে। শুধু জানতে পারে, গ্রামসুবাদে সবাইকার 'পিসি', এক মাতৃপ্রতিম বয়স্থা স্ত্রীলোক আর সেই ছেলেটির ছোট বোন।

এই গ্রামের এক সুদখোর বৃদ্ধ; চড়া সুদে টাকা ধার দিয়ে থাকে। সারা গ্রামে তার প্রভাব ও প্রতিপত্তির মূল কথা এই।

চাষী পরিবারের এই নয়নলোভন তরুনীটির উপর পড়ে বুড়ো সুদখোরের লালসাভরা দৃষ্টি। অন্তরের বাসনা, তাকে গাঁটছড়া বেঁধে ঘরে তুলবে।

বিপদ আসে আরও একদিক থেকে।

কন্দর্পের দাক্ষিণ্যে যখন দুটি তরুণ-তরুনী পরস্পরের প্রতি গভীরভাবে আকৃষ্ট তখন দেখা যায়, দূর গাঁয়ের এক ধনীর বকাটে ছেলে, মেয়েটিকে পাবার জন্যে উন্মত্ত প্রায়!

একদিকে বৃদ্ধ সুদখোরের লোলুপ দৃষ্টি, অপরদিকে দুশ্চরিত্র এক ধণী-তনয়ের নারী-শিকারের শর-সন্ধান!

এই দুই অগ্নিকুণ্ডের জ্বলন্ত গ্রাসমুখে অসহায় ঐ গ্রাম্যবালা!

তরুণীর ইচ্ছত ও অভিলাষ, দুইই রক্ষা পায় ঐ মাতৃপ্রতিম বৃদ্ধার চেষ্টায়। প্রণয়াবদ্ধ দুটি হৃদয় মিলিত হয় অটুট বন্ধনে, অপর পক্ষের সব মৎলব ব্যর্থ করে দিয়ে……